भारत सरकार

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

**राज्‍य सभा**

अतारांकित प्रश्न सं. **991**

सोमवार, 3 दिसम्‍बर, 2012 को उत्तर के लिए

**निधि का उपयोग**

**991. श्री आयनुर मंजूनाथा :**

क्‍या **पृथ्‍वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

1. क्‍या मौसम संबंधी पूर्वानुमानों, महासागरों में होने वाली हलचल तथा प्राकृतिक आपदाओं की भविष्‍यवाणी संबंधी कार्य के आधुनिकीकरण हेतु अभिप्रेत निधि का उपयोग नहीं किया गया है;
2. यदि हां, तो इसके कारण क्‍या हैं;
3. क्‍या सरकार ने इस प्रयोजनार्थ आवंटित की गई निधियों के अर्थपूर्ण उपयोग हेतु कोई कदम उठाए हैं;
4. यदि हां, तो तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या है; और
5. इस परियोजना में नेशनल सेंटर फॉर मीडियम रेंज वेदर फोरकास्‍टिंग की क्‍या भूमिका है?

**उत्तर**

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री

(श्री एस. जयपाल रेड्डी)

1. 2007-2012 के दौरान 11वीं योजना में भारत मौसम-विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के चरण-I के लिए आंवटित किए गए 920 करोड़ रु में से 448.06 करोड़ रु का वास्‍तविक व्‍यय हुआ ।
2. पवन प्रोफाइलरों, विमान अड्डों के उपकरणों, उपरितन वायु ध्‍वनि प्रणालियों के अपग्रेडशन, लाइटनिंग डिटेक्‍टरों को छोड़कर सभी प्रेक्षण प्रणालियों का प्रापण पूरा कर लिया गया है। अपरिहार्य पुन: निविदा प्रक्रिया के कारण उपर्युक्‍त प्रेक्षण प्रणालियों का प्रापण नहीं किया जा सका। कई राज्‍यों में भूमि अभिग्रहण/सिविल निर्माण कार्य से संबंधित कुछ आकस्‍मिक कारणों के कारण प्रापण की गई प्रेक्षण प्रणालियों को चालू करने में देरी हुई।
3. जी हां।
4. भविष्‍य में ऐसी पुनरावृति को रोकने के लिए प्रेक्षण प्रणालियों की पुन: निविदा प्रक्रिया में अतिरिक्‍त सावधानी बरती गई है। उपरोक्‍त के बावजूद, आईएमडी के आधुनिकीकरण चरण-I के अतंर्गत अत्‍याधुनिक प्रेक्षण, मॉनीटरिंग/ पूर्व चेतावनी और डेटा दृश्‍यकरण/ सूचना प्रसंस्‍करण और संचार प्रौद्योगिकीयां चालू कर हाथ से किए जाने वाले कई प्रचालन कार्यों को पूरी तरह स्‍वचालित कर दिया गया है। इस प्रकार के हाथ से किए जाने वाले कार्यों में लगे सभी कार्मिकों को पर्याप्‍त अभिविन्‍यास, प्रशिक्षण तथा कौशल विकास के अवसर प्रदान कराए गए है ताकि वे न केवल प्रौन्‍नत प्रौद्योगिकी प्‍लेटफार्मों को उपयुक्‍त ढंग से प्रचालित करने का कौशल प्राप्‍त कर सके बल्‍कि क्षेत्र विशेष की चेतावनी और पूर्वानुमान सेवाओं को ग्राहक अनुकूल बनाकर गुणवत्ता बढ़ाने में दक्षतापूर्वक योगदान भी दे सकें।
5. राष्‍ट्रीय मध्‍यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्‍द्र में उच्‍च कार्य निष्‍पादन वाली कम्‍प्‍यूटिंग (एचपीसी) प्रणाली को चालू किए जाने से वैश्‍विक/ प्रादेशिक पूर्वानुमान प्रणालियों में उपग्रह विकिरण डेटा को सम्‍मिलित करने तथा वैश्‍विक पूर्वानुमान प्रणालियों के स्‍थानिक विभेदन को 50 किमी ग्रिड पैमाने से लगभग 22 किमी ग्रिड पैमाने तक बढ़ाने का अवसर प्राप्‍त हुआ है। नई वैश्‍विक पूर्वानुमान प्रणाली के कार्य निष्‍पादन मूल्‍याकंन से पूर्वानुमान करने के कौशल में मात्रात्‍मक वृद्धि हुई है। अत: उन्‍नत वैश्‍विक डेटा आमेलन- पूर्वानुमान प्रणाली प्रचालन उपयोग के लिए आईएमडी को हस्‍तांतरित कर दी गई है।

\*\*\*\*\*